Toppersnotes
Unleash the topper in you

बिहार पुलिस

कांस्टेबल

केन्द्रीय चयन पर्षद (सिपाही भर्ती), पटना

भाग – 4

सामान्य अध्ययन -1

(इतिहास एवं राजव्यवस्था)

SIERRA INNOVATIONS

इतिहास

1. इतिहास (प्रागैतिहासिक) 1

- अर्थ
- क्षेत्र
- कालक्रम
- प्रागैतिहासिक संस्कृतिया एवं उपकरण

2. आद्य ऐतिहासिक विश्व 3

- हडप्पा सभ्यता– सामग्री
- सामाजिक धार्मिक स्थिति

3. प्राचीन सभ्यताएँ (विश्व) 9

- मैसोपोटामियाँ, रोम, चीन, यूनान
- विज्ञान, तकनीकी, सामाजिक, धार्मिक स्थिति
- प्रारम्भिक भारतीय धर्म
- वैदिक
- बौद्ध
- जैन
- वैष्णव
- शैव

4. मध्यकालीन आदेश 27

- सामन्तवाद, राज्य और चर्च
- अरब अनुभव (आक्रमण)
- मौर्यो का राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास
- मगध का उत्थान
- पाटलीपुत्र का विकास
- मौर्य शिलालेख
- मौर्य शासक

5. आधुनिकीकरण के वाहक 38

- पुनर्जागरण
- धर्म सुधार आन्दोलन
- भौगोलिक खोजे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था मौर्य काल से लेकर गुप्त काल तक
- विदेशी आमद
- भाषा और साहित्य
- व्यापार एवं उद्योग
- आर्यभटट की विज्ञान एवं तकनीकी

6. आधुनिकीकरण का दौर 47

- ब्रिटिश अनुभव (a) 1688 की क्रान्ति
- औद्योगिक क्रान्ति
- अमेरिका का स्वतन्त्रता संग्राम
- फ्रान्स की क्रान्ति

7. आधुनिकीकरण का प्रसार 52

- सल्तनत काल के अन्तर्गत राजनैतिक बदलाव
- (महत्वपूर्ण शासक एवं उनका साम्राज्य)

8. आधुनिकता के दोष/नुकसान 63

- उपनिवेशवाद और नव उपनिवेशवाद
- प्रथम विश्व युद्ध
- हिन्दू मुस्लिम संस्कृति (1500–1700)
- मुगल काल में समाज एवं धर्म
- भाषा साहित्य
- कला एवं स्थापत्य

9. तीन विचार धाराएं एवं उनके आपसी संघर्ष 76

- पूंजीवाद

- समाजवाद
- फ्रांसीवाद
- नाजीवाद
- द्वितीय विश्व युद्ध

10.स्वच्छ बनाम प्रेरित राजनीति 82

- राष्ट्र संघ
- संयुक्त राष्ट्र संघ
- गुट निरपेक्ष आन्दोलन
- शीत युद्ध
- भक्ति एवं सूफी आन्दोलन
- प्रमुख सन्त एवं उनके उपदेश
- उनकी विशेषताएं
- भारतीय संस्कृति में योगदान

11. आधुनिकता के बाद/आगे के बदलाव 94

- USSR का विघटन
- वैश्विकरण
- ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन
- राजस्व समाधान
- आर्थिक प्रभाव
- विस्तार की राजनीति
- प्रमुख यूरोपियन शक्तियां,युध्द,संधियां,गवर्नर

12. 1857 की क्रान्ति 114

- कारण
- प्रकृति
- कुंवर सिंह की बिहार में प्रभावी भूमिका
- अन्य आन्दोलन

13. 19 वी शताब्दी में भारतीय जनजागृति एवं राष्ट्रीय आन्दोलन (1918-1947) 124

- महत्वपूर्ण व्यक्तित्व एवं संगठन
- स्वः आत्मनिरीक्षण के बिन्दू
- अन्तर्राष्ट्रीय चेतना का विकास
- असहयोग आन्दोलन
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन
- भारत छोडो आन्दोलन
- नौसेना विद्रोह

14.विभाजन और स्वतन्त्रता 138

- मुस्लिम लीग और दो देश सिद्धान्त
- वेवेल प्लान, माऊन्ट बेटन प्लान
- भारत स्तन्त्रता अधिनियम

राजनीति विज्ञान

1. राजनीति विज्ञान की अवधारणाएं 151

- प्रकृति, परिभाषाएं और क्षेत्र
- परम्परागत एवं आधुनिक सिद्धान्त, विशेषताएं एवं भिन्नता
- राजनीति विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध- इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान भूगोल, दर्शनशास्त्र
- राजनीति विज्ञान के अध्ययन की महत्ता

2. राज्य 166

- परिभाषाएँ
- राज्य के आवश्यक तत्व
- प्रवृति, राज्य का औचित्य एवं महत्व
- भारतीय संविधान की विशेषताएं

3. राज्य की उत्पत्ति के सिद्धान्त 168

- दैवीय सिद्धान्त
- शक्ति सिद्धान्त
- सामाजिक अनुबन्ध सिद्धान्त
- विकासवादी सिद्धान्त
- भारतीय संघ– कार्य
- भारतीय संघ एवं ईकाईयां राज्य का नाम, सीमा में बदलाव की प्रक्रिया एकीकरण, संघ राज्य के लक्ष्य एवं विशेषताएं

4. मौलिक अधिकार 171

- प्रमुख संशोधन
- सम्प्रभुता
- परिभाषा
- विशेषताएं
- प्रकार
- अद्वैतवादी एवं बहुलवादी विशेषताएं
- मुख्य सिद्धान्त
- विधि- अर्थ, स्त्रोत प्रकार, विधि एवं एथिक्स में सम्बन्ध
- स्वतन्त्रता- अर्थ, प्रकार
- समानता– अर्थ, प्रकार, समानता एवं स्वतन्त्रता में सम्बद्ध
- न्याय- अर्थ, प्रकार, सामाजिक न्याय
- अधिकार- अर्थ, प्रकार, विशेषताएं लास्की के विचार में अधिकार
- कर्तव्य- अर्थ, अधिकार, एवं कर्तव्य मे सम्बद्ध
- नीति निर्देशक तत्व
- अन्तर नीति निर्देशक तत्व एवं मौलिक अधिकार में

5. संघ कार्यकारिणी 192

- राष्ट्रपति- चुनाव शक्तियां, कार्य अविश्वास प्रस्ताव
- उपराष्ट्रपति– चुनाव शक्तियां कार्य
- मंत्री परिषद– संरचना
- प्रधानमंत्री- शक्तियाँ, कार्य, कर्तव्य एवं भूमिका

6. संसद 201

- लोकसभा- संरचना, शक्तियां, कार्य
- राज्यसभा- संरचना, शक्तियां, कार्य

7. राज्य कार्यकारिणी 213

- राज्यपाल- शक्तियां, कार्य, स्थिति
- राज्य मंत्री परिषद- कार्य एवं शक्तियां
- मुख्यमंत्री- शक्तियां, कार्य, कर्तव्य एवं भूमिका

8. भारतीय न्याय व्यवस्था 218

- उच्चतम न्यायालय – संगठन एवं कार्य
- पटना उच्च न्यायालय– संगठन एवं कार्य
- लोक अदालत, फास्ट ट्रेक कोर्ट, परिवार न्यायालय, PIL

9. भारत में निर्वाचक व्यवस्था 228

- निर्वाचक आयोग

10. राष्ट्रीय एकता एवं चुनौतियाँ 233

- साम्प्रदायिकता
- क्षेत्रवाद
- जातिवाद
- नक्सलवाद

11. भारत की विदेश नीति 236

- निर्धारिक तत्व
- Nam, SAARC, UNO

- बिहार विधान सभा- संरचना, शक्ति एवं कार्य
- बिहार विधान परिषद- संरचना, शक्ति एवं कार्य
- स्थानीय स्वशासन- विशेष बिहार के सन्दर्भ में
- 73 वां 74 वां संविधान संशोधन
- ग्रामीण एंव शहरी स्थानीय सरकार

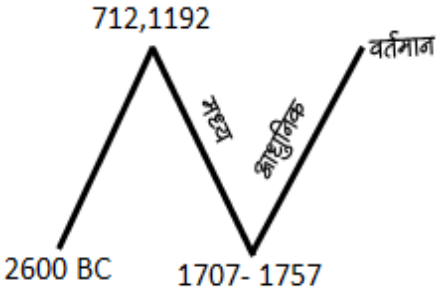

कालक्रम

1. 2600 BC – 1900 BC
   सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900 BC – 1500 BC
   ----
3. 500 BC – 1000 BC
   ऋग्वैदिक काल
4. 1000 BC – 600 BC
   उत्तरवैदिक काल
5. 600 BC – 321 BC
   महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321 BC – 184 BC
   मौर्य काल
7. 184 BC – 321 AD
   मौर्योत्तर काल
8. 319 AD – 550 AD
   गुप्तकाल
9. 606 AD – 647 AD
   हर्षवर्द्धन
10. 750 AD – 1000 AD
    राजपूत काल
11. 1192 (1206) – 1526 AD
    सल्तनत काल
12. 1526 AD – 1707 (1858)
    मुगल काल
13. 1707 (1757) – वर्तमान
    आधुनिक काल

प्राचीन काल में भारत
इतिहास

प्रागैतिहासिक काल एवं अर्थ

- इतिहास शब्द ग्रीक अथवा यूनानी भाषा के शब्द हिस्टोरिया से बना है जिसका अर्थ होता है खोज अथवा छानबीन ।
- इतिहास का संबंध अतीत की उन घटनाओं से है जिनका हमारे पास लिखित एवं प्रमाणित तिथि उपलब्ध है ।
- ग्रीका विद्वान हैरोडोट्स ने इतिहास की प्रथम पुस्तक "हिस्टोरिका" लिखी ।
- हैरोडोट्स को इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहास को जानने के लिए निम्न स्त्रोत है ।

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्य स्त्रोत
3. विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत

अध्ययन की दृष्टि से भारतीय इतिहास को हम निम्न प्रकार बांट सकते हैं–

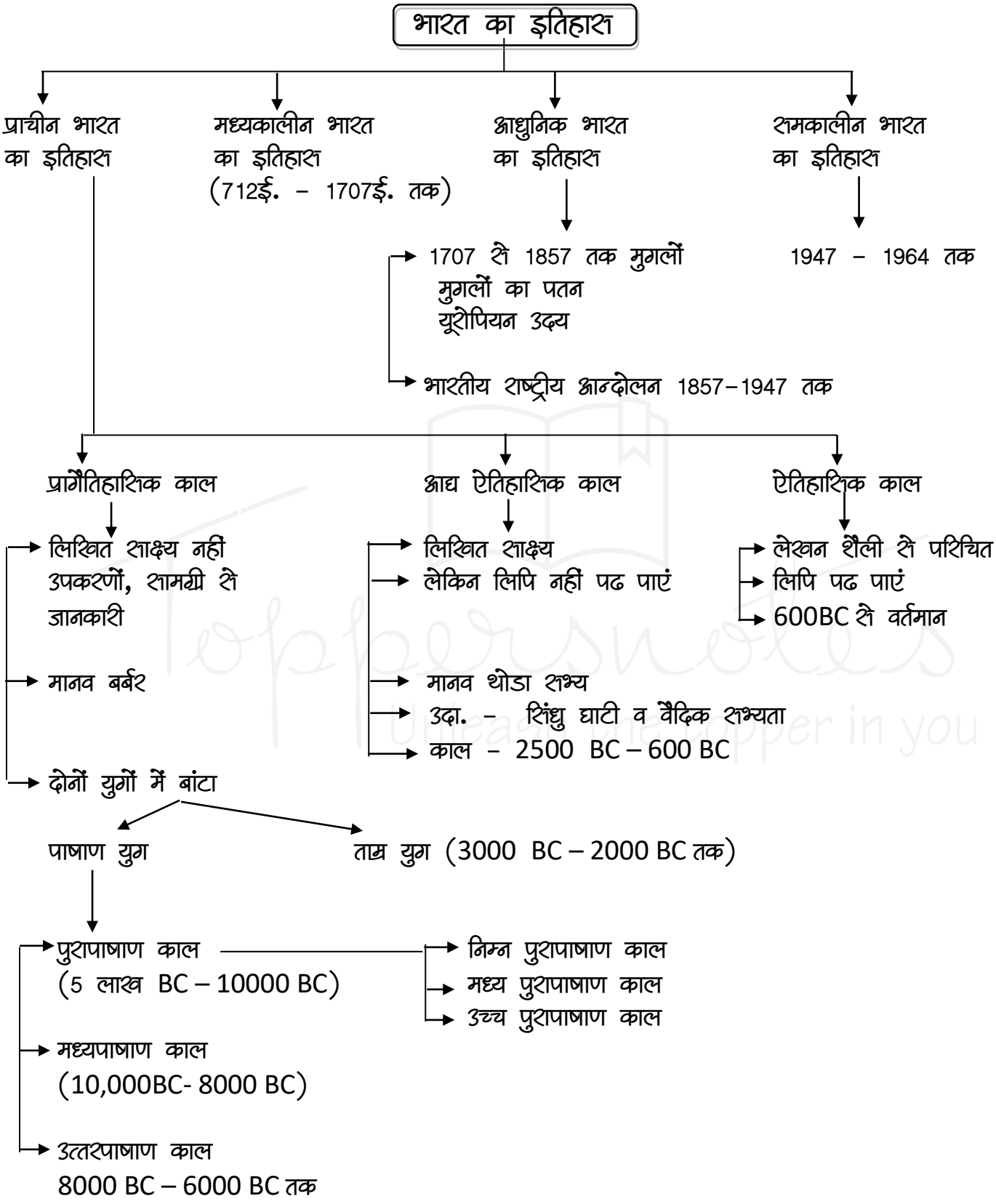

पुरापाषाण काल –

- कौर संस्कृति, फलक संस्कृति एवं ब्लैड संस्कृति का उदय ।
- आधुनिक मानव होमो सैपिनियंस का उदय ।
- मानव आग जलाना ।
- इस काल में चापर – चौपिंग संस्कृति का उदय, डी एन वाडिया ने खोज की , यह उत्तर भारतीय संस्कृति है ।
- दक्षिण भारत की संस्कृति हैण्ड – एक्स संस्कृति है इसकी खोज रॉबर्ट ब्रुस फुट ने की ।
- चापर-चौपिंग एवं हैण्ड ऐक्स संस्कृति (उत्तर एवं दक्षिण) मिलन स्थल चौतरान (जम्मू कश्मीर) है ।

प्रमुख स्थल –

भीम बेटका – शैला शील चित्रों के प्रसिद्ध
डीडवाना (राजस्थान)
– हथनौरा

मध्य पाषाण काल

- इस काल को माइक्रोलिथ काल कहते है । छोटे – छोटे पाषाण उपकरणों के कारण ।
- भारत में इस काल का जनक HCL क्लाईल ।
- मानव न इस काल में सर्वप्रर्थम पशु पालन करना सीखा ।
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य है । बागौर (राजस्थान) एवं आदमगढ (MP)
- इस मध्यपाषाण काल को संक्रमण काल कहा जाता हे ।
- मध्य पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल सराय नाहर यूपी है ।

उत्तर/नव पाषाण काल

- सर जॉन लुबाक ने नव पाषाण काल शब्द दिया ।
- गार्डन चाइल्ड ने इस काल को ''नव पाषाणिक क्रांति'' कहा ।
- ली मैंसियर ने उत्तर भारत में नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- नेविलियन फ्रेंजर ने दक्षिण भारत से नव पाषाणिक उपकरण खोजे ।
- मानव ने कृषि करना सीखा ।
- वृहद पैमाने पर पशुपालन एवं ग्रामीण संस्कृति के साक्ष्य मिले ।

प्रमुख स्थल –

1. मेहरगढ (पाक) – नव पाषाण काल का सबसे प्राचीन स्थल
   8000 BC पूर्व कृषि के साथ साक्ष्य मिले ।
2. कोल्डी हवा – (यूपी) – 6000 वर्ष पूर्व चावल की खेती के साक्ष्य मिले ।
3. बुजहोम एवं गुपफकराल (J&K) बुजहोम से मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य भी मिले है ।

नोट –
प्रागऐतिहासिक काल के जनक भारत में डा. प्राइम रोज थे । जिन्होने लिंगसुगुर (कर्नाटक) से पाषाण कालीन उपकरण खोजे थे ।

नव पाषाण काल में दक्षिण भारत की प्रमुख फसल रागी थी ।

आद्य ऐतिहासिक विश्व

सिन्धु घाटी सभ्यता

- परिचय
- विस्तार
- कालक्रम
- निवासी
- नगर नियोजन
- महत्वपूर्ण नगर
- लिपि
- पतन
- अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

परिचय
हडप्पा सभ्यता

- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन ब्रंटन व विलियम ब्रंटन – 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- कनिघम इस ओर ध्यान दिलाया कनिघम को भारतीय पुरातात्विक विभाग का पितामह कहा जाता है ।
- 1921 में सर जॉन मार्शल के निर्देशन में दयाराम साहनी ने इसका उत्खनन किया ।
- सर्वप्रर्थम इस स्थल की खोज होने के कारण यह स्थल हडप्पा सभ्यता कहलाया ।

- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।

सिंधु घाटी सभ्यता –

- 1922 में रखाल दास बर्नजी ने इस मोहनजोदडो की खोज की ।
- इस सभ्यता के स्थल सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे थे । अतः इस घाटी का नाम सिंधु घाटी सभ्यात पडा ।

सरस्वती नदी घाटी सभ्यता –

- आजादी के बाद खोजे गए सर्वाधिक स्थल इस नदी क्षेत्र में है । अतः इसका नाम सरस्वती नदी घाटी सभ्यता भी कहा जाने लगा है ।

कास्य युगीन सभ्यता –

- उत्खनन में कंस्य के बर्तन या उपकरण अधिक मिले ।

नगरीय सभ्यता –

- सिंधु घाटी सभ्यता एक विस्तृत एवं समृद्ध नगरीय सभ्यता है । यहां बडे – बडे नगरों का उदय हुआ था ।

विस्तार –

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- भारत

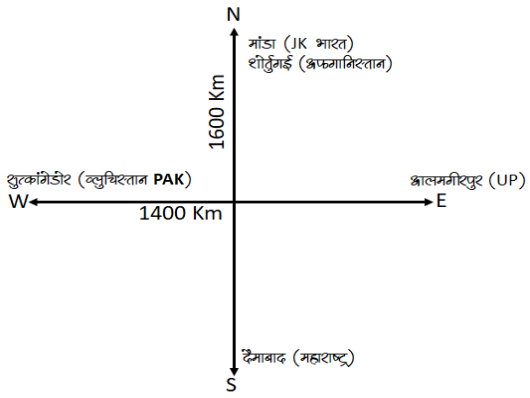

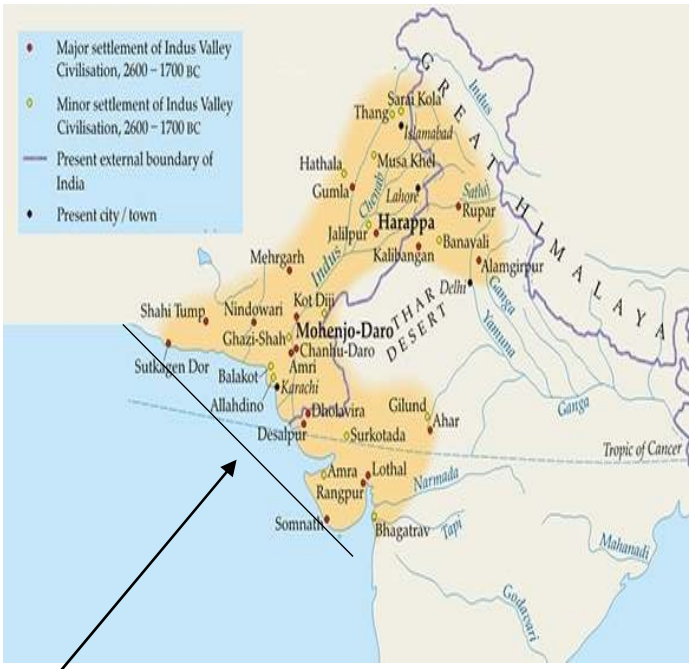

1300 किमी समुद्री सीमा

नोट –

- अफगानिस्तान में सिंधु घाटी सभ्यता के मात्र दो स्थल थे । शार्तगोई एवं मुंडीगॉक है ।
- शार्तगोई से नहरों द्वारा सिंचाई के साक्ष्य मिले है ।
- सिंधु घाटी सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया के सभ्यता से 12 गुना बडी थी । जबकि मिश्र की सभ्यता से 20 गुना बडी थी ।
- आजादी से पूर्व खोजे समस्त स्थल पाकिस्तान में चले गये । भारत में केवल दो स्थल रहे, रंगपुर (गुजरात) और कोटला निहंगखां (रोपड पंजाब)
- भारत का सबसे बडा स्थल राखी गढ (हरियाणा) है, दूसरा बडा स्थल धौला वीरा (गुजरात) है ।
- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुडवा राजधानी बताया है ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

कालक्रम –

जॉन मार्शल – 3250 BC – 2750BC
माधोस्वरूप वत्स – 3500 BC – 2700 BC
रेडियो कार्बन पद्धति – 2300 BC – 1750 BC
एनसीआरटी – 2500 BC – 1750 BC
फेयर सर्विस – 2000 BC – 1500 BC

क्रर्नेस्ट मैके – 2800 BC – 2500 BC

निवासी –

यहां से प्राप्त कंकालों के क्राधार पर चार प्रजातियों में बांटा जा सकता है ।

1. भूमध्य सागरीय
2. क्रल्पाईन
3. मंगोलायड
4. प्रोटो क्रास्ट्रालायड

सर्वाधिक प्रजाति भूमध्य सागरीय प्रजाति मिली है ।

नगर नियोजन –

- नगर दो भागों में विभाजित – पश्चिमी भाग एवं पूर्वी भाग । पश्चिमी भाग दुर्ग था, पूर्वी भाग सामान्य नगर था ।
- पश्चिमी भाग में प्रशासनिक लोग रहते थे । तथापूर्वी भाग में जनसामान्य लोग रहते थे ।
- सिंधु घाटी सभ्यता में पक्की ईंटों के मकान हैं ।
- सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का क्रभाव ।
- नगर परकोटे युक्त होते थे ।
- घरों के दरवाजे मुख्य सडक की तरफ न खुलकर पीछे की तरफ खुलते थे । केवल लोथल में मुख्य सडक की तरफ घरों के दरवाजे खुलते थे ।
- कालीबंगा दोहरे परकोटे युक्त है । जबकि चन्हुदडो में कोई परकोटा नही ।
- धोलाबीरा तीन भागों में विभक्त है । पश्चिमी, पूर्वी एवं मध्यमा ।
- लोथल एवं सुरकोटडा का पश्चिमी एवं पूर्वी भाग दोनो ही एक ही परकोटे से घिरे हुए हैं ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर क्राधारित थे क्रर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 10 मीटर (मोहनजोदडो) की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के क्रन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुक्रां होता था ।

कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।

ईंट का क्राकार – 1 : 2 : 4

जल निकासी हेतु पक्की ईंटों की नालियां होती थी । विश्व की किसी क्रन्य सभ्यता में पक्की नालियों के साक्ष्य नही मिलते थे ।

प्रमुख नगर

1. हडप्पाः –

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (क्रब – शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता – दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के क्रावास एवं क्रन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते हैं ।
- टीले पर निर्मित – व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा
- शंख का बना बैल 18 वर्ताकार चबूतरे मिले है ।
- यहां से सर्वाधिक क्रभिलेख युक्त मुहरें मिली है ।
- 6 – 6 की पंक्ति में कुल 12 कमरों वाला क्रावास स्थल मिला है ।
- एक स्त्री के गर्भ से निकलता हुक्रा पौधा की मृणमूर्ति मिली है । सम्भवतः उर्वरता की देवी होगी ।

2. मोहनजोदडो : –

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)

सिन्धु नदी के तट पर

उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

मोहनजोदडो का शाब्दिक क्रर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार –

(a) 11.88 × 7.01 × 2.43 मीटर

(b) सम्भवतया यहाँ धार्मिक क्रनुष्ठानों का क्रायोजन किया जाता रहा होगा ?

(c) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की क्राश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल क्रन्नागार सिंधु सभ्यता की सबसे बडी इमारत है । ल. 45.71×15.23 मीटर चौडी है ।

(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य

(iv) सूती कपडे के साक्ष्य

(V) हाथी का कपालखण्ड

(vi) कांसा की नर्तकी की मूर्ति मिली है ।

(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की क्रवस्था में है

(a) इसने शॉल क्रोढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।

(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

(ix)योगी की मूर्ति मिली है ।

(x) क्राद्य शिव की मूर्ति मिली है ।

(xi)बांध से पतन के साक्ष्य मिलते है ।

(xii)सर्वाधिक मुहरें सिंधु घाटी सभ्यता के यहां मिलती है ।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
  (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटनुमा है
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

6. रोपड (PB)

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

7. धौलावीरा

गुजरात – कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्त्ता – रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है (खेल का मैदान)

8. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता – एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) – अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- झाकर एवं झुकर संस्कृति के साक्ष्य मिलते है ।
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के पद चिन्ह है ।
- एक सौन्दर्य पेटिका मिली है । जिसमें एक लिपिस्टिक है ।

9 कालीबंगा:- अवस्थिति- हनुमानगढ

नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्वती/चौतांग

उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल बी. के. थापर जे. पी. जोशी एम. डी. खरे

शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)

उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईटों के मकान ।

सामग्री:-

→ सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।

→ युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।

→ एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो घन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।

→ जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों ।

→ मकान कच्ची ईटों के थे बल्लियो की छत होती थी ।

→ जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।

→ ईटों को धूप से पकाया जाता था ।

→ वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।

→ लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।

→ यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।

→ यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।

→ यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।

→ यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।
→ यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
→ इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
→ यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।
→ अन्य सामग्री:- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदि:
→ 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है।

नोट:- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

10कुनाल (HR)

- चाँदी के दो मुकुट

12रोजदी (गुजरात)

- हाथी के साक्ष्य

11रोपड (PB)

- मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य ।

12. दैमाबाद

- रथ मिले है ।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन

राजनीतिक व्यवस्था: -

ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी --- ।

आर्थिक व्यवस्था -

कृषि

- खेती व्यवस्था - प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले है । एक साथ दो - दो फसल बोने के साक्ष्य मिले है (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते है । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँओ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते है - शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले है । सम्भवत: नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते है।

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरो पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती है ।

उद्योग

- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते है । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- लकडी के कारखाने भी थे ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे ।

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते है ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती है ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते है और जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, योनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी – जैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थिति: –

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवत: 4 भागों मे विभाजित था –
  - (i) पुरोहित वर्ग
  - (ii) व्यापारी वर्ग
  - (iii) किसान वर्ग
  - (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्रा मे मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।
- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा मे हथियार मिलते है ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था –
  - (i) पूर्ण शवाधान
  - (ii) आंशिक शवाधान
  - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे ।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापार: –

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते है ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते है ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते है ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते है ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरे: –

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती है –
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई है ।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।

- मुहरें वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी – सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदड़ों व हड़प्पा से बड़ी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती है ।
- (II) कूबड़ वाला सांड के चित्र

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल – बाढ
- लोम्बिरिक–सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष–जलवायु परिवर्तन

निष्कर्ष

हड़प्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रहीं । अंततः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

विश्व प्राचीन सभ्यताएं

मेसोपोटामिया की सभ्यता

मेसोपोटामिया युनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है– दो नदियों के बीच की भूमि । इस देश का आधुनिक नाम ईराक है । इस प्रदेश को दजला और फरात नदियाँ सींचती है । मेसोपोटामिया को इसकी अर्द्धचन्द्र सी आकृति तथा खेती की दृष्टि से अत्यधिक उर्वर होने के कारण उपजाऊ अर्द्धचन्द्र भी कहा गया है । प्राचीनकाल में इस प्रदेश का दक्षिणी भाग 'सुमेर' कहलाता था जो मेसोपोटामिया की सभ्यता का मुख्य केन्द्र था । सुमेर के उत्तर– पूर्व की तरफ के भाग को बाबुल (बेबीलोन) तथा अक्कद कहते थे और उत्तर की ऊँची भूमि असीरिया कहलाती थी

मेसोपोटामिया के राज्यों का उत्थान और पतन

कालान्तर में उत्तर के पर्वतीय प्रदेशों से आए सुमेरियन लोग मेसोपोटामिया में बस गए और उन्होंने एक अत्यन्त समृद्ध सभ्यता का विकास किया । सुमेरियन लोगों ने नगर राज्य की सरकार स्थापित की उर, लगाश, एरेक तथा एरिडू प्रसिद्ध नगर राज्य थे । 2500 ई.पू. लगभग सारगॉन प्रथम ने, जो अक्कद से आया था, सुमेरियन लोगों को जीत लिया । सुमेर और अक्कद दोनों राज्यों को मिलाकर उसने एक सुदृढ राज्य स्थापित किया, किन्तु 2100 ई.पू. के लगभग ये अक्कादियन लोग भी पराजित हो गए। बाबुल या बेबीलोन में एक नए सामी राजवंश का उदय हुआ । बेबीलोन नगर अब इस नए साम्राज्य की राजधानी बन गया। बेबीलोनिया के सबसे प्रसिद्ध सम्राट हम्मूराबी ने विभिन्न नगर राज्यों में होने वाली लडाइयों को रोककर तथा समस्त देश में एक जैसे कानून लागू कर एक दृढ राज्य स्थापित किया ।

बेबीलोनिया की सभ्यता भी सुमेरियन सभ्यता पर आधारित थी। इसके अनन्तर मेसोपोटामिया में असीरियाई लोगों ने अपना साम्राज्य (लगभग 1100 से 612 ई. पू.) स्थापित किया । असीरियाई लोगों ने सीरिया, फिलस्तीन फिनिशिया आदि प्रदेशों को जीतकर विशाल साम्राज्य स्थापित किया । इसके बाद काल्डियाई लोगों ने असीरियाई लोगों को पराजित कर एक दूसरे शक्तिशाली बेबीलोनियन साम्राज्य (612 ई.पू. से 539 ई.पू.) का निर्माण किया, किन्तु 539 ई. पूर्व उन्हें पारसियों के हाथों पराजित होना पडा । सुमेरिया बेबीलोनिया, असीरिया तथा कोल्डिया की सभ्यताओं को समग्र रूप में मेसोपोटामिया की सभ्यता के नाम से जाना जाता है ।

मेसोपोटामिया सभ्यता की विशेषताएँ

1. हम्मूराबी की विधि संहिता–

बेबीलोन के सम्राट हम्मूराबी ने अपनी प्रजा के लिए एक विधि संहिता बनाई थी जो इस समय उपलब्ध सबसे प्राचीन विधि संहिता है । सम्राट ने इसे एक 8 फुट ऊँची पत्थर की शिला पर उत्कीर्ण कराया था । हम्मूराबी का दण्ड विषयक सिद्धान्त यह था कि ''जैसे को तैसा और खून का बदला खून'' ।

2. मेसोपोटामिया का सामाजिक जीवन–

मेसोपोटामिया सभ्यता में राजा पृथ्वी पर देवताओं का प्रतिनिधि माना जाता था । राजा व राजपरिवार के बाद दूसरा स्थान पुरोहित वर्ग का था जो संभवतः राजतंत्र की प्रतिष्ठा से पूर्व शासक रहे थे । मध्यम वर्ग में व्यापारी जमींदार एवं दुकानदार थे । समाज में दासों की स्थिति सबसे नीचे थी । लगातार युद्ध होते रहने के कारण समाज में सेना का महत्वपूर्ण स्थान था ।

3. आर्थिक जीवन

(अ) कृषि व पशुपालन – इस सभ्यता के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था । वहां के किसान भूमि की

जुताई हलों से करते थे और बीज एक कीप द्वारा बोते थे। खेतों की सिंचाई के लिए वे नदियों के बाढ के पानी को नहर द्वारा ले जाकर बडे-बडे बाधों में इकट्ठा कर लेते थे। हलों से जुताई हेतु मवेशी काम में लेते थे और उनकी नस्ल सुधार, के लिए पशुओं का प्रजनन भी किया जाने लगा था।

(आ) व्यापार व उद्योग- मेसोपोटामिया की सभ्यता मूलतः एक व्यावसायिक सभ्यता थी वहाँ देवता का मंदिर एक धार्मिक स्थल ही नहीं एक व्यावसायिक केन्द्र भी था। यहीं सर्वप्रथम बैंक प्रणाली का विकास हुआ। मेसोपोटामिया का भारत की सिन्धु-सरस्वती सभ्यता से व्यापारिक सम्बन्ध था। सिन्धु-सरस्वती सभ्यता की कई वस्तुएँ मेसोपोटामिया के उर नगर की खुदाई में मिली है।

4. धार्मिक मान्यताएँ

मेसोपोटामिया के लोग अनेक देवताओं में विश्वास करते थे। प्रत्येक नगर का अपना संरक्षक देवता होता था। उसे 'जिगुरात' कहते थे जिसका अर्थ है ''स्वर्ग की पहाडी''। उर नगर मेसोपोटामिया के सबसे बडे नगरों में से था। उर नगर में जिगुरात का निर्माण एक कृत्रिम पहाडी पर ईंटों से हुआ था। उर के 'जिगुरात' में तीन मंजिलें थी और उसकी ऊँचाई 20 मीटर से अधिक थी। मेसोपोटामिया के लोग परलोक की अपेक्षा इस लोक के जीवन में अधिक रूचि रखते थे। उनका ध्यान इस लोक के जीवन की व्यावहारिक समस्याओं पर केन्द्रित था। उनके पुरोहित भी व्यवसाय में रत रहते थे।

5. ज्ञान-विज्ञान

विज्ञान के क्षेत्र में मेसोपोटामिया के लोगों की उपलब्धियों महत्वपूर्ण थीं। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने काफी उन्नति कर ली थी। उन्होंने सूर्योदय, सूर्यास्त तथा चन्द्रोदय और चन्द्रास्त का ठीक समय मालूम कर लिया था। उन्होंने दिन और रात्रि के समय का हिसाब लगाकर पूरे दिन को 24 घण्टों में बाँटा था। साठ सैकेण्ड को मिनट और साठ मिनट के एक घण्टे का विभाजन सबसे पहले इन्होंने ही किया। रेखागणित के वृत्त को उन्होंने 360 डिग्री में विभाजित करना प्रारम्भ किया था। इस तरह, मेसोपोटामिया के निवासी विज्ञान और गणित की उन्नत परम्पराओं से अवगत थे।

6. स्थापत्य कला

मेसोपोटामिया के कलाकारों ने मेहराब का भी आविष्कार किया। मेहराब स्थापत्य कला की एक महत्वपूर्ण खोज थी क्योंकि यह बहुत अधिक वजन सम्भाल सकती थी, और देखने में आकर्षक लगती थी।

7. कीलाक्षर लिपि

मेसोपोटामिया की पहली लिपि का विकास सुमेर में हुआ। सुमेरियन व्यापारियों ने अपना हिसाब-किताब रखने के लिए कीली जैसे चिह्न बनाकर लेखन कला का विकास किया। इसे क्यूनीफार्म या कीलाक्षर कहते हैं।

मिस्र की सभ्यता

मिस्र की सभ्यता का विकास नील नदी की घाटी में हुआ था। अफ्रीका के लोग नील नदी को गंगा की भांति पवित्र मानते थे, क्योंकि प्राचीनकाल में मिस्र के सुख और समृद्धि का कारण नील नदी ही रही है। मिस्र की सभ्यता बहुत प्राचीन थी, किन्तु, इसके सन्तोषजनक प्रमाण प्राप्त नहीं हुए है। प्रामाणिक आधार पर मिस्र के राजनैतिक इतिहास का ज्ञान 3400 ई. पू. से ही प्राप्त होता है। मिनीज नाम शासक ने 3400 ई.पू. ही मिश्र में राजनेतिक ढांचा खडा किया था इथियोपी, नूबी एवं लियम जाति के लोगों ने इस सभ्यता का निर्माण किया था। मिस्त्र की सभ्यता के इतिहास में पिरामिड युग, सामन्तशाही युग साम्राज्यवादी युग विशेष उल्लेखनीय है। इनमें से पिरामिड युग सर्वाधिक गौरवपूर्ण था।

मिस्र सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ:

1. मिस्र का सामाजिक जीवन

मिश्र के शासक फराओं कहलाते थे और प्रजा पर उनकी सत्ता निरंकुश थी। लोग उसे ईश्वर का प्रतिनिधि मानते थे। उच्च वर्ग में सामन्त व पुरोहित मध्यवर्ग में व्यापारी व्यवसायी तथा निम्न वर्ग में कृषक तथा दास थे। स्त्री व पुरूषों में लगभग उच्च वर्ग के लोग आभूषण पहनते थे। संगीत नृत्य नटबाजी, पशु, जुआ आदि उनके मनोरंजन के साधन थे। हाथीदाँत जडित मेज और कुर्सियों तथा बहुमूल्य पर्दे व कालीन सामन्तों के भवनों की शोभा बढाते थे।

2. आर्थिक जीवन

(अ) कृषि व पशुपालन- मिश्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। जौ, प्याज, बाजरा व कपास की खेती की जाती थी। मिश्र को प्राचीन विश्व का ''अन्न का भण्डार'' कहा जाता था, क्योंकि वहाँ वर्ष में तीन बार फसलें बोयी जाती थी। बकरी, गधा, कुत्ता, गाय, ऊँट, सुअर आदि पालतु पशु थे।

(आ) व्यापार व उद्योग- मिश्र में धात लकडी, मिट्टी, काँच, कागज तथा कपडे का काम करने वाले कुशल कारीगर थे। मिश्रवासियों को ताम्बे के अतिरिक्त अन्य

धातुएँ बाहर से मंगवानी पडती थीं । मिस्त्रवासी लकडी पर नक्काशी तथा काँच पर चित्रकारी कार्य से भी अवगत थे । वे वस्तु विनिमय द्वारा व्यापार करते थे । अरब व इथोपिया से उनके व्यापारिक सम्बन्ध थे ।

3. धार्मिक जीवन

मिश्रवासियों के प्रमुख देवता रा (सूर्य), ओसरिस (नील नदी) तथा रिन (चन्द्रमा) थे । उनके देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे । सभ्यता के प्रारम्भिक काल में मिश्रवासी बहुदेववादी थे किन्तु सामाज्यवादी युग में अखनाटन नामक फराओ ने एकेश्वरवाद की विचारधारा को महत्व दिया तथा सूर्य की उपासना आरम्भ की ।

4. ज्ञान-विज्ञान

मिश्र के लोगों ने तारों व सूर्य के आधार पर अपना कलेण्डर बना लिया था तथा वर्ष के 360 दिन की गणना कर ली थी । मिश्रवासियों ने धूप घडी का आविष्कार कर लिया था । उन्होंने अपनी वर्णमाला विकसित करके पेपीरस वृक्ष से कागज का निर्माण भी किया था ।

5. पिरामिड

मिस्रवासियों का विश्वास था कि मृत्यु के बाद शव में आत्मा निवास करती है । अतः वे शव पर एक विशेष तेल का लेप करते थे । इससे सैकडों वर्षों तक शव सडता नहीं था । शवों की सुरक्षा के लिए समाधियां बनाई जाती थी जिन्हें वे लोग पिरामिड कहते थे । पिरामिडों में रखे शवों को ममी कहा जाता था ।

मिश्र के पिरामिडों में गिजे का पिरामिड प्राचीन वास्तुकला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है । गिजे का यह पिरामिड 481 फीट ऊँचा तथा 755 फीट चौडा है । इसमें ढाई-ढाई टन के 23 लाख पत्थर के टुकडे लगे हैं । इसके बाहर पत्थर की एक विशालकाय नृसिंह की मूर्ति जिसे स्फिक्स कहा जाता है, बनी है । पिरामिड मिश्रवासियों के गणित व ज्यामिति के ज्ञान के साक्षी हैं । मिश्र में अब भी ऐसे कई पिरामिड विद्यमान हैं ।

चीन की सभ्यता

चीन की प्राचीन सभ्यता ह्वाही और चांग जियांग (याम्टीसीक्यांग) नदियों की घाटियों में विकसित हुई थी । चीनी लिपि आरम्भ में चित्रात्मक थी । धीरे -धीरे इसकी स्वयं की वर्णमाला का निर्माण हुआ । मंगोल जाति के लोगों ने इस सभ्यता को जन्म दिया एवं विकास में सहयोग दिया । उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर चीन का व्यवस्थित राजनैतिक इतिहास ई.पू. 2852 से फूसी नामक शासक से प्रारम्भ होता है । चीन के शासकों के राजवंशों में शांग वंश, चाऊ वंश, हान वंश, सुई वंश, तांग वंश, शुंग वंश प्रमुख थे। ।

चीनी सभ्यता की विशेषताएँ

1. सामाजिक जीवन- चीन का चीन समाज मंडारिन, कृषक, कारीगर, व्यापारी तथा सैनिक वर्ग में विभाजित था । सेना में भर्ती होने वाले लोग या तो अत्यन्त निर्धन, अपरिश्रमी या समाज में अवांछनीय चरित्र के माने जाने वाले होते थे । एच.ए डेविस का कथन है कि प्राचीन सभ्यताओं में चीन ही एक देश है जो शांति के लिये संगठित रहा तथा वहां सैनिक होना अपमानजनक समझा जाता था ।

चीनी सभ्यता में संयुक्त परिवार की प्रथा थी । परिवार मुखिया वयोवृद्ध व्यक्ति होता था । वहाँ के जीवन में नैतिकता पर विशेष बल था । समाज में स्त्रियों को कोई गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं था । पर्दा प्रथा व तलाक प्रथा भी प्रचलित थी ।

2. आर्थिक जीवन

(अ) कृषि व पशुपालन- चीनी लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था । चावल की खेती तथा चाय की खेती बहुतायत से की जाती थी । नहरों द्वारा सिंचाई होती थी । भेड, सुअर, गाय, बैल, कुत्ते आदि पालतु पशु थे ।

(आ) व्यापार उद्योग- चीनी हस्तकला एवं उद्योग के अन्तर्गत रेशम तैयार करना और कपडा बुनना प्रमुख था । अन्य महत्वपूर्ण उद्योग चीनी मिट्टी के बर्तन बनाना था । चीन से नमक मछली लोम (फर) सूती तथा रेशमी कपडों का व्यापार बडे पैमाने पर होता था । प्राचीन बेबीलोन, मिश्र एवं भारत से चीनी लोग विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करते थे ।

3. धार्मिक जीवन

चीनी लोग प्रकृति के उपासक थे । वे सूर्य, आकाश, पृथ्वी, वर्षा की पूजा करते थे । चीन में राजा को परमात्मा का पुत्र माना जाता था । वे जादू-टोना बलि आदि में भी विश्वास करते थे । कालान्तर में चीनवासियों की धार्मिक विचारधारा कन्फ्यूशियस के सुधारवादी एकेश्वरवाद एवं लाओत्से की शाश्वत आत्मा के ''ताओवादा'' तथा बुद्ध धर्म से प्रभावित हुई ।

4. ज्ञान-विज्ञान

प्रचीन चीन में ज्ञान-विज्ञान की खूब उन्नति हुई । कागज, छापाखाना, स्याही, बारूद, चित्रकला तथा दिशासूचक यंत्र का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में ही हुआ था । कन्फ्यूशियस

और लाओत्से चीन के महान विचार थे । लीयो वहाँ का प्रसिद्ध कवि था ।

5. चीन की दीवार

चीन की दीवार प्राचीन चीनी स्थापत्य कला का विश्वप्रसिद्ध नमूना है । इसका निर्माण चीन के शासक शीहवांगती द्वारा हूणों के निरन्तर आक्रमणों से रक्षा के लिए करवाया था । यह दीवार 1800 मील लम्बी व 20 फीट चौडी व 20 फीट ऊँची है । इस दीवार पर थोडी-थोडी दूरी पर बुर्ज जैसे छोटे-छोटे किले बने हुए हैं ।

युनान की सभ्यता

सभ्यता के विकास की दृष्टि से युनान पहला यूरोपीय देश था । इतिहासकारों का मत है यमनान के आदिनिवासी माझीनियम लोगों को पराजित करके उन्हें गुलाम बना लिया था । उन्होंने अपने मौलिक चिन्तन तथा निष्ठा से एक महान सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण किया । अनुमान है कि युनानी सभ्यता का जन्म 1500 ई. पू हुआ था ।

विभिन्न पहाडों और खाइयों के कारण प्राचीन युनानी लोग कभी भी एक संयुक्त राष्ट्र स्थापित नहीं कर पाए । सम्पूर्ण युनान में कई नगर-राज्यों में दो प्रमुख नगर राज्य स्पार्टा और एथेंस थे । स्पार्टी में सैनिक शासन था तथा एथेंस में लोकतंत्र । शेष युनानी नगर राज्य या तो एथेंस की तरह थे अथवा स्पार्टा का अनसरण करते थे ।

युनानी सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

1. स्पार्टा का जीवन- स्पार्टा नगर राज्य को सदैव पडोसी देशों के आक्रमण का भय बना रहता था । इसलिये वहाँ सैनिक शासन स्थापित हुआ । वहाँ का शासन स्वेच्छाचारी था । स्पार्टा का प्रथम व्यवस्थापक एवं विधान निर्माता लाइकर्मस था । उसने वहाँ के निवासियों के लिए कठोर अनुशासन में रहने की व्यवस्था की थी । बच्चों को कठिनाइयों का सामना करने की शिक्षा दी जाती थी । निर्बल बच्चों को टेसिटस पहाडी की चोटी से गिराकर मार दिया जाता था ।

   स्पार्टा को साहसी एवं योद्धा सैनिक और आँखें मूँदकर आज्ञापालन करने वाले नागरिक तैयार करने में तो निश्चय ही सफलता मिली किन्तु दर्शन, साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में स्पार्टा की देन नहीं के बराबर है ।
2. एथेन्स का जीवन- एथेन्स का नगर राज्य स्पार्टा के नगर राज्य से सर्वथा भिन्न था । एथेस में जनतांत्रिक शासन था । राजा का बहुत सम्मान था । न्यायाधीश ड्रेको ने 621 ई.पू लिखित कानूनों का संग्रह तैयार किया था । उसके कानून उच्च वर्ग के हितों की रक्षा करने वाले थे । तत्पश्चात क्लाईस्थनीज ने एथेंस में जनतंत्र की जडें जमा दीं । ईरान के महत्वकांक्षी सम्राट दारा ने ग्रीक को जीतने के बाद युनान पर आक्रमण किया । एथेंस व ईरानियों के मध्य मैराथन मैदान में युद्ध हुआ । इस युद्ध में युनान की विजय हुई और युनानियों ने अपनी सभ्यता का स्वतंत्रतापूर्वक विकास किया ।
3. पेराक्लीज युग- पेराक्लीज युनान (एथेंस) का महान जनतांत्रिक नेता था । पेराक्लीज ने अपने सुधारों के द्वारा एथेन्स के प्रजातंत्र को व्यापक एवं सुदृढ बनाया । पेराक्लीज का मत था कि सारे व्यक्तियों को न्याय का समान अधिकार है । उसके शासनकाल में कला, साहित्य, संगीत तथा दर्शन का बहुत विकास हुआ । एथेंस में दुखान्त व सुखान्त नाटकों तथा संगीत के कई आयोजन होते थे । होमर की विश्व प्रसिद्ध रचनाएँ इलियट व ओडेसी इसी काल की थी । उसके समय में गणित, ज्योतिष व दर्शन की शिक्षा दी जाती थी । इसी काल में विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात ने ज्ञान व चरित्र के विकास पर बल दिया । दार्शनिक प्लेटो व अरस्तु भी इसी काल के विद्धान थे । देवी एथिना का मंदिर भवन निर्माण कला का अनुपम नमूना है । हिरोडोटस व थ्यूसीडिडीज इस युग के महान इतिहासकार थे । पाईथोगोरस तथा हिपोक्रेटीज इस काल के प्रसिद्ध गणितज्ञ थे । इन्हीं उपलब्धियों के कारण पेराक्लीज के युग को यूनान के इतिहास में स्वर्ण युग कहा जाता है । प्रोफेसर डेविड के अनुसार " पेराक्लीज का युग, युनान के इतिहास का ही नहीं वरन् विश्व के इतिहास का स्वर्ण युग था ।

वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒ साहित्य
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
साहित्य का अंग नहीं है ।
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक

वेद –

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है ।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों की रचना आर्यो ने की ।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था ।
- वेद 4 है –

1. ऋग्वेद –

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है ।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।
  - गायत्री मंत्र सावित्र / सावित्र (सूर्य) को समर्पित है ।
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है ।
  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था ।
- आठवें मण्डल में घोसा, शिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम मुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :–

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद : –

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :–

- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय – औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद ।

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद – 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद – 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तैतरेय ब्राह्मण

सामवेद – 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य –

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये ।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य –

- इनकी संख्या 108 है ।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है ।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है ।
- विषयवस्तु – रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् –

1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है
इसमे कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है ।

2. छान्दोग्य उपनिषद् –
   - इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है ।
   - भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है ।
   - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है ।

3. वृहदारण्यक उपनिषद् –
   - सबसे लम्बा उपनिषद्
   - इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है ।

4. जाबाल उपनिषद् –
   - चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है ।

5. ऐतरेय उपनिषद् –
बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

6. मुण्डकोपनिषद् –
"सत्यमेव जयते"

वेद	कर्म मार्ग – जैमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण	प्रभाकर व कुमारिल भट्ट
आरण्यक	ज्ञान मार्ग – बादरायण – उत्तर
मीमांसा दर्शन	
उपनिषद् ब्रह्मसूत्र	

- शंकराचार्य – अद्वैत
- रामानुज – विशिष्ट अद्वैत
- निम्बार्काचार्य – द्वैत – अद्वैत
- वल्लभाचार्य – शुद्ध अद्वैत
- माध्वाचार्य – द्वैत

वेद एवं उनसे संबंधित उनके ब्राह्मणक, आरण्यक एवं उनषिद ग्रंथ

वेद	भाग	विषय	पुरोहित	ब्राह्मण्क	आरण्यक	उपनिष्द
ऋग्वेद	शाकल बालखिल्य वाश्कल	छन्द/प्रार्थनाएं	होता/होतृ	ऐतरैय	ऐतरैय कौशीतकी	एतरैय कौशील्की
यजुर्वेद	कृष्ण यजुर्वेद शुक्ल यजुर्वेद	उच्च स्वर में उचारित किये जाने वाले मंत्र	अध्वर्यु	शतपथ तैतरैय मां,ायन	तैतरैय मंत्रायन वृहदारण्यक	कठ, तैतरैय वृहदायण्यक नाराण्यणश्वर श्वेतश्वर, ईश
शामवेद	कौथूम, राणण्यम और जैनिय	संगीत, गायन	उदगाता	पंचविष, षडविच जैमीनी	जैमीनी छन्दोग्य	केन जैमीनी छन्दोग्य
अथर्ववेद	शौनक,पीलाद	भौतिकवादी जादू, टोना लौकिक विधि विधान	ब्रहमा	गोपथ	–	प्रश्न, मुण्डक, मांडुक्य

वेदांग –

वेदों के शरलीकरण हेतु इनका निर्माण किया गया । यह वैदिक शाहित्य का हिस्शा नही है । इशके छह भाग है –

1. शिक्षा – इशे वेदों की नाशिका कहा जाता है ।
2. ज्योतिष – इशे वेदों की आंख कहा जाता है ।
3. व्याकरण – इशे वेदों का मुख कहा जाता है ।
4. छनद – इशे वेदों का पैर कहा जाता है ।
5. निरूक्त – इशे वेदों का कान कहा जाता है ।
6. कल्प – इशे वेदों की हाथ कहा जाता है ।

कल्प के अंतर्गत शुल्व शूत्र ज्यामिति की शबशे प्राचीन पुश्तक है ।

पुराण – शंख्या – 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने शंकलित किया ।

- मत्श्य पुराण – शबशे प्राचीन एवं प्रामाणिक
  इशमें शातवाहन शाशकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इशका भाग दुर्गाशप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति शाहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति

- इशमें शामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है ।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।
  "बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- शुंग व शातवाहन वंश के शमय इशकी रचना हुई ।

टीकाकार = भारूची
कुल्लक भट्ट
मेधातिथी गोविन्दराज

याज्ञवल्क्य स्मृतिः – टीकाकार = विश्वरूप विज्ञानेश्वर अपरार्क

नारदस्मृतिः – इशमें दाशों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है ।

कात्यायनः – इशमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है ।